International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 04 April- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

परसंस्कृतिकरण से भील महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर प्रभाव (धार जिले के विशेष संदर्भ में)

किर्ती गोस्वामी
शोधार्थी –समाजकार्य
डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, डॉ. अंबेडकर नगर, महू जिला–इंदौर, मध्यप्रदेश

सारांश –भील जनजाति के लोग सभ्य समाजों से दूर –दराज निर्जन दुर्गम स्थानों एवं जंगलों में रहने वाले होते है। 90 के दशक में भारत में आधुनिकीकरण की अवधारणा आई, तब केवल भारतीय समाज ही नहीं बल्कि जनजातीय समाज भी प्रभावित हुआ। परसंस्कृति ने जनजातीय समाज की सामाजिक एवं आर्थिक संरचना को सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों तरीकों से प्रभावित किया है।

शब्दकुंजी– भील महिलायें एवं परसंस्कृतिकरण का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर प्रभाव

प्रस्तावना–संस्कृति मानव के व्यक्तित्व का निर्माण करने में भी महत्वपूर्ण योगदान निभाती है जिससे व्यक्ति किसी न किसी संस्कृति में जन्म तो लेता है और उसका पालन–पोषण भी उसी सांस्कृतिक पर्यावरण में ही होता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही संस्कृति ग्रहण करता है और अपने ही व्यक्तित्व में उसको आत्मसात भी करता है।

संस्कृति व्यक्ति की आदतों का निर्धारण भी करती है जिसके कारण व्यक्ति किसी न किसी पूर्व प्रचलित संस्कृति में ही जन्म लेता है और उसी के अनुसार अपना खानपान और वेशभूषा से संबंधित आदतों का निर्धारण करता है।

संस्कृति व्यक्ति के व्यवहारों में एकरूपता प्रदान करती है जिससे एक संस्कृति से संबंधित सभी व्यक्तियों के व्यवहारों, रीति–रिवाजों, प्रथाओं, लोकाचारों, मूल्यों, आदर्शो एवं नैतिकता में समानता पाई जाती है। इसीलिए समस्त लोग उनको समान रूप से मानते है एवं उनके ही अनुरूप आचरण करते है, जिसके कारण समाज में समानता और एकरूपता पाई जाती है।

भील महिलायें– भील महिलायें अपनी सामाजिक परंपराओं, रूढियों, रीति–रिवाजों के साथ अपना जीवनयापन कर रही है। भील महिलायें अत्यंत श्रम करने वाली होती है। ये कृषि कार्यों में पुरूषों का हाथ बटाती है, जैसे कि पशुओं को जंगल में ले जाकर चराना, दूध निकालना आदि इनके दैनिक कार्य है। मजदूरी करना, उपले बेचना, चूल्हा जलाने के लिए लकडियां एकत्रित करना आदि कार्य महिलाये ही करती है। इनकी आर्थिक स्थिति

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 04 April- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

बहुत कमजोर होती है। पुरूषों के साथ भील स्त्रियां कंधे से कंधा मिलाकर काम करती है। उनका यही श्रम उनकी आर्थिक स्थिति को संदृढ करता है।

परसंस्कृतिकरण–परसंस्कृतिकरण दूसरों की संस्कृति को ग्रहण करने वाले समूह की धारणाओं पर आधारित होती हैं बाहरी गुण की स्वीकृति समूह के स्वभाव के आधार पर अवधारणाओं, अवस्थाओं एवं सामाजिक वातावरण द्वारा निर्धारित की जाती है। जैसे के एक जनजाति अपनी आर्थिक दृष्टिकोण से अप्रभावित रहने के बावजूद भी उसी वेशभूषा, खानपान को ग्रहण करता है।

परसंस्कृतिकरण के संपर्क में आने वाले व्यक्तियों की सामाजिक स्थिति में भी परिवर्तन आता है, क्योंकि यही व्यक्ति उन्हीं तथ्यों का हस्तांतरण भी कर सकता है जिससे वह परिचित है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी संस्कृति का प्रतिनिधित्व स्वयं ही एक सीमा तक ही कर सकता है, लेकिन संपूर्ण संस्कृति का नहीं।

अध्ययन क्षेत्र–चूंकि मध्यप्रदेश के धार जिले जनजातिय बाहुल्य क्षेत्र होने के कारण इसे शोध अध्ययन का क्षेत्र चुना गया है।

शोध प्रविधि–प्रस्तुत शोध अध्ययन में वैज्ञानिक पद्धति को आधार मानते हुये निरीक्षण, परीक्षण एवं प्रयोगात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन का समग्र–मध्यप्रदेश के धार जिले की समस्त भील जनजाति की 300 महिलायें उत्तरदाता अध्ययन का समग्र है।

अध्ययन की इकाई–प्रस्तुत शोध में धार जिले के चयनित गांव की भील जनजाति की महिलायें अध्ययन की इकाई है।

सारिणी क्रं. –1

परसंस्कृतिकरण से भील महिलाओं का सामाजिक जीवन प्रभावित होने से संबंधित जानकारी

क्र.	उत्तरदाता	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हां	105	35
2.	नहीं	195	65
	कुल	300	100

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 04 April- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

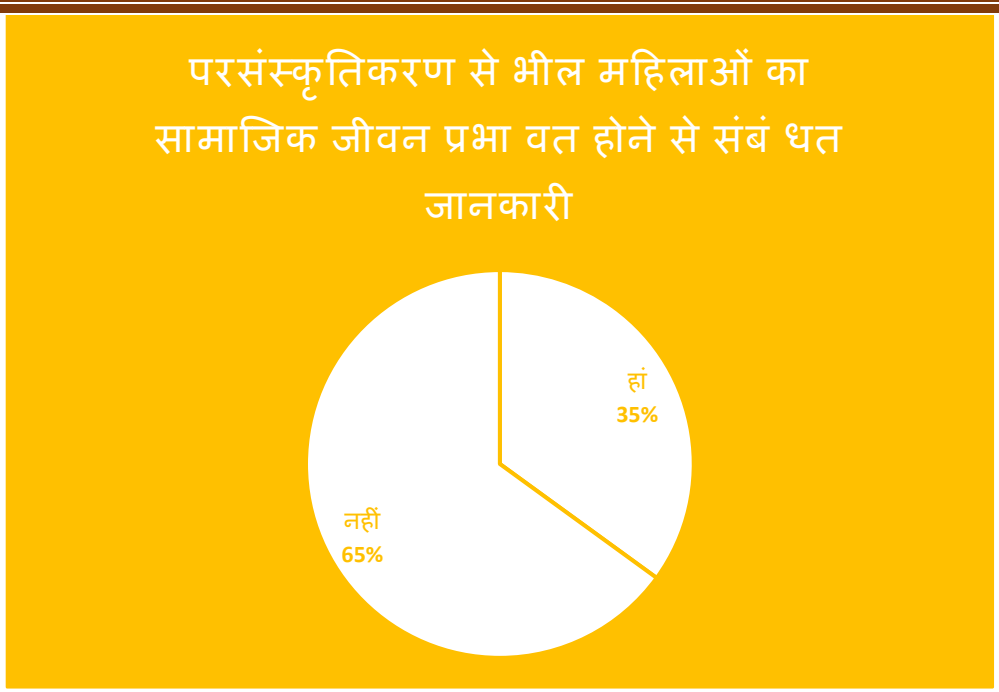

उपरोक्त सारिणी में उत्तरदाताओं से परसंस्कृतिकरण से भील महिलाओं का सामाजिक जीवन प्रभावित होने से संबंधित जानकारी प्राप्त करने पर ज्ञात हुआ कि 300 महिला उत्तरदाताओं में से 105 महिला उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि परसंस्कृतिकरण से भील महिलाओं का सामाजिक जीवन प्रभावित हुआ है जिसका 35 प्रतिशत है जो कि बहुत कम है जबकि 195 महिला उत्तरदाताओं ने यह अस्वीकार किया है कि परसंस्कृतिकरण से भील महिलाओं का सामाजिक जीवन प्रभावित हुआ है जिसका 65 प्रतिशत है जो कि सर्वाधिक है। अतः इससे स्पष्ट है कि परसंस्कृतिकरण से भील महिलाओं का सामाजिक जीवन प्रभावित नहीं हुआ है

सारिणी क्रं. –2

दूसरी जनजातियों से संपर्क करने के बारे मे जानने से संबंधित जानकारी

क्र.	उत्तरदाता	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हां	30	10
2.	नहीं	270	90
	कुल	300	100

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 04 April- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

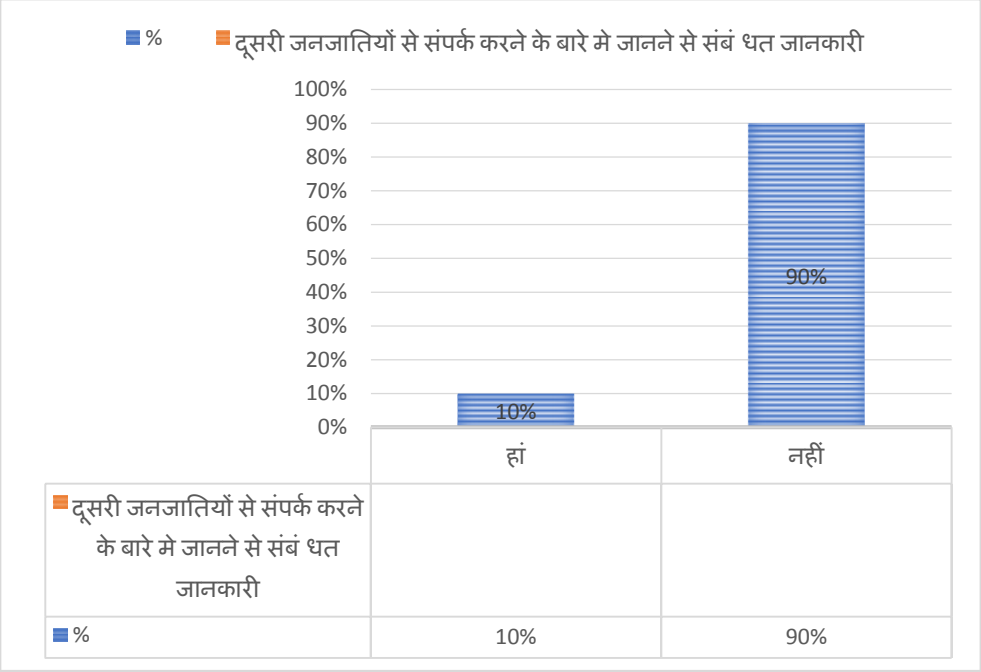

उपरोक्त सारिणी में उत्तरदाता से दूसरी जनजातियों से संपर्क करने के बारे में जानने से ज्ञात हुआ कि 300 महिला उत्तरदाता में से 30 महिलाओं ने यह स्वीकार किया कि वे दूसरी जनजातियों से संपर्क करती है जिसका 10 प्रतिशत है जो कि सबसे कम है। जबकि 270 महिलाओं ने अस्वीकार किया है कि वे दूसरी जनजातियों से संपर्क मे रहती है, जिसका 90 प्रतिशत है जो कि सबसे अधिक है। अतः इससे स्पष्ट है कि भील महिलायें अपनी जनजाति के अलावा दूसरी जनजातियों के संपर्क में नहीं रहती है।

सारिणी क्रं. –3

अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अन्य जाति के लोगों को बुलाने से संबंधित जानकारी

क्र.	उत्तरदाता	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हां	15	5
2.	नहीं	285	95
	कुल	300	100

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 04 April- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

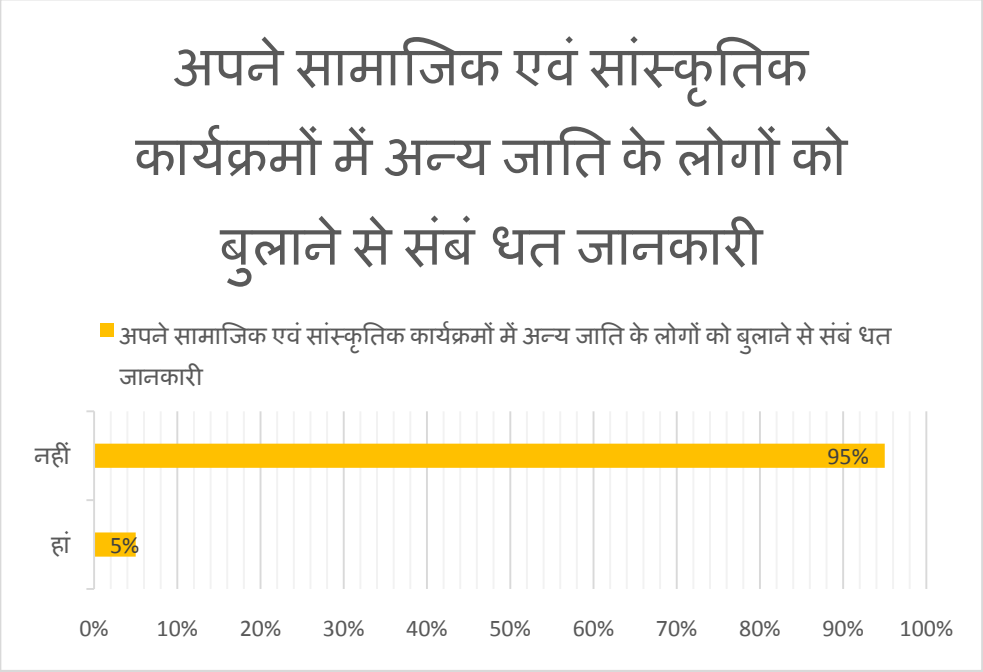

उपरोक्त सारिणी में उत्तरदाता से अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अन्य जाति के लोगों को बुलाने से संबंधित जानकारी जानने से ज्ञात हुआ कि 300 उत्तरदाता में से 15 महिलाओं ने स्वीकार किया है कि वे अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अन्य जाति के लोगों को बुलाते है जिसका 5 प्रतिशत है। जबकि 285 महिला उत्तरदाता ने बताया कि वे अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अन्य जाति के लोगों को नहीं बुलाते है, जिसका 95 प्रतिशत है जो कि सबसे अधिक है। अतः इससे स्पष्ट है कि भील जनजाति के लोग अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अन्य जाति के लोगों को नहीं बुलाते है।

सारिणी क्रं. –4

उच्च जातियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में जाने से संबंधित जानकारी

क्र.	उत्तरदाता	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हां	30	10
2.	नहीं	270	90
	कुल	300	100

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 04 April- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

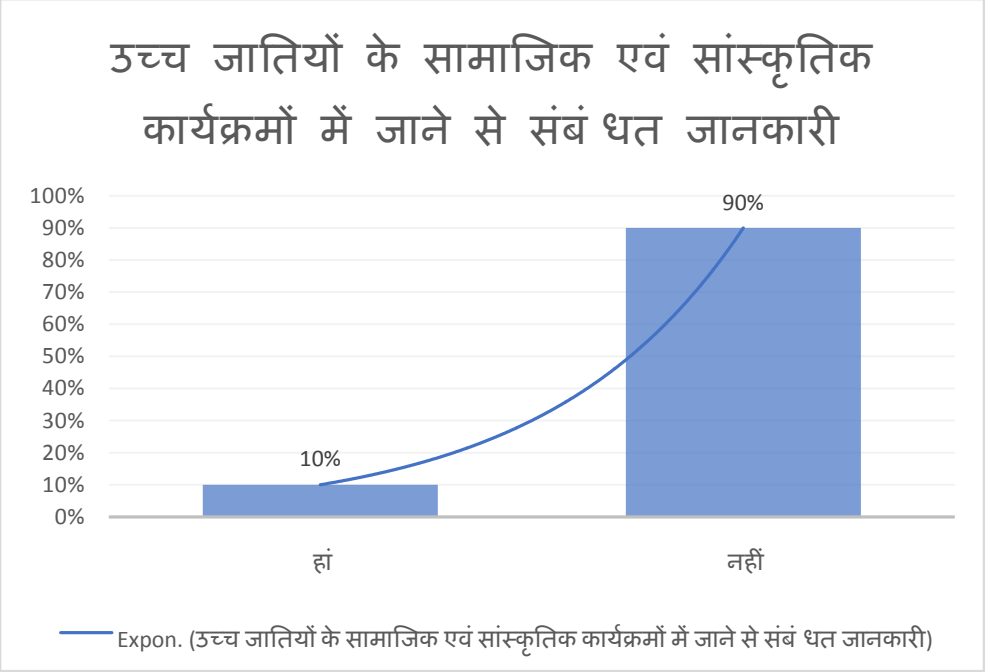

उपरोक्त सारिणी में उत्तरदाता से उच्च जातियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में जाने से संबंधित जानकारी प्राप्त करने पर ज्ञात हुआ कि 300 उत्तरदाता में से 30 उत्तदाता ने यह स्वीकार किया कि वे उच्च जातियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में जाते है जिसका 10 प्रतिशत है जो कि सबसे कम है जबकि 270 उत्तरदाताओं ने बताया कि वे उच्च जातियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में नहीं जाते है जिसका 90 प्रतिशत है, जो कि सबसे अधिक है। अतः इससे स्पष्ट है कि भील जनजाति की महिलायें उच्च जातियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में नहीं जाती है।

सारिणी क्रं. – 5

परसंस्कृतिकरण से व्यवसाय के स्वरूप में परिवर्तन आने से संबंधित जानकारी

क्र.	उत्तरदाता	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हां	90	30
2.	नहीं	210	70
	कुल	300	100

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 04 April- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

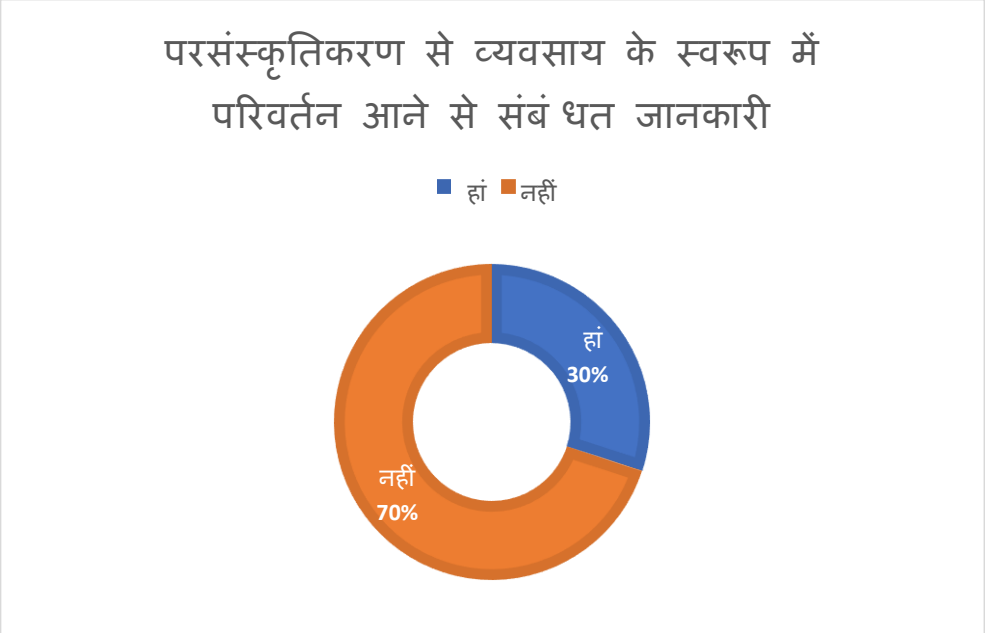

उपरोक्त सारिणी में उत्तरदाता से परसंस्कृतिकरण से व्यवसाय के स्वरूप में परिवर्तन आने से संबंधित जानकारी प्राप्त करने पर ज्ञात हुआ कि 300 महिला उत्तरदाताओं में से 90 महिलायें यह मानती है कि परसंस्कृतिकरण से व्यवसाय के स्वरूप में परिवर्तन आया है जिसका 30 प्रतिशत ह जो कि बहुत कम है, जबकि 210 महिला उत्तरदाता का मानना है कि परसंस्कृतिकरण से व्यवसाय के स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं आया है, जिसका 70 प्रतिशत है, जो कि सर्वाधिक है। अतः इससे स्पष्ट है कि परसंस्कृतिकरण से भील महिलाओं के व्यवसाय के स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं आया है।

सारिणी क्रं. –6

सारिणी क्रं. –6

परसंस्कृतिकरण से सामाजिक जीवन पर प्रभाव से संबंधित जानकारी

क्र.	उत्तरदाता	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हां	90	30
2.	नहीं	60	20
3.	दोनों	150	50
	कुल	300	100

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 04 April- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

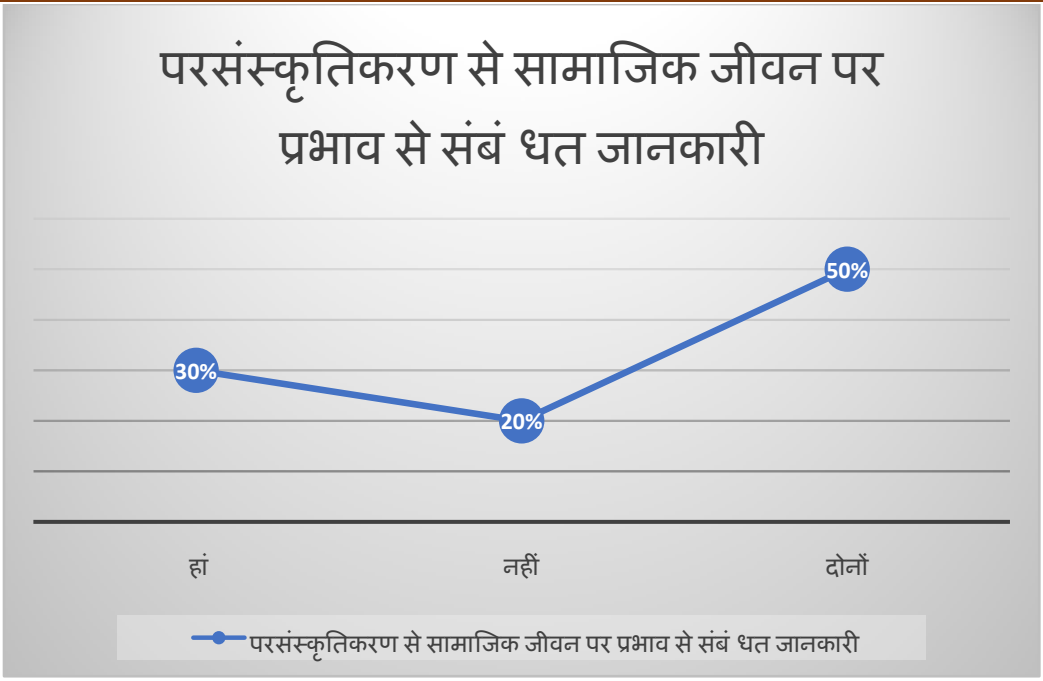

उपरोक्त सारिणी में उत्तरदाता से परसंस्कृतिकरण से सामाजिक जीवन पर प्रभाव से संबंधित जानकारी जानने पर ज्ञात हुआ कि 300 महिला उत्तरदाताओं में से 90 महिलाओं ने स्वीकारा है कि परसंस्कृतिकरण से सामाजिक जीवन पर प्रभाव पडता है जिसका 30 प्रतिशत है, जबकि 60 महिलाओं का मानना है कि परसंस्कृतिकरण से सामाजिक जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पडता है। उसी प्रकार 150 महिला उत्तरदाताओं ने दोनों ही बातों को स्वीकार किया है कि परसंस्कृतिकरण से सामाजिक जीवन पर प्रभाव पडता भी है और नहीं भी पडता है, जिसका 50 प्रतिशत है, जो कि सर्वाधिक है। अतः इससे स्पष्ट है कि परसंस्कृतिकरण का सामाजिक जीवन पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही प्रभाव पडते है।

निष्कर्ष–

- धार जिले की भील महिलाओं कापरसंस्कृतिकरण से सामाजिक जीवन प्रभावित नहीं हुआ है।
- धार जिले की भील महिलायें अपनी जनजाति के अलावा दूसरी जनजातियों के संपर्क में नहीं रहती है।
- भील जनजाति के लोग अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अन्य जाति के लोगों को नहीं बुलाते है।
- भील जनजाति की महिलायें उच्च जातियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में नहीं जाती है।
- परसंस्कृतिकरण से भील महिलाओं के व्यवसाय के स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं आया है।
- भील जनजाति की महिलायें उच्च जातियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में नहीं जाती है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 04 April- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

- भील जनजाति को महिलायें उच्च जातियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में नहीं जाती है।
- धार जिले की भील जनजाति की महिलाओं पर परसंस्कृतिकरण का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही प्रभाव पडते है।

सुझाव –

- भील महिलाओं की आर्थिक जीवन पर परसंस्कृतिकरण से बदलाव लाने के लियेसरकारी एवं गैर–सरकारी संस्थाओं को काय करने की आवश्यकता है।
- उच्च जाति वर्ग को सवैंधानिक कानून का पालन करते हुयेभील जनजाति के प्रति अपनी सोच बदलने की आवश्यकता है।
- विशेष रूप से धार जिले को भील महिलाओं के सामाजिक जीवन के विकास हेतु अथक प्रयास की जरूरत है।

संदर्भ–

- गुप्ता, मन्जू (2012), ***"जनजातियों का सामाजिक आर्थिक उत्थान",*** अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
- नाथ व्हाय. वी. एस, (1960), ***"भील्स"*** ऑफ रतनलाल यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा
- मिनी जे. के. मौली जे. के. (2005), ***"भारत में जनजातियों की जीवनशैली सम्बधी संकेतक आदिवासी स्वस्थ्य पत्रिका",*** वन्यजाती, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, जबलपुर
- मित्र, विश्नाथ (2014), ***"भारतीय जनजाति में परम्परागत हिन्दू समाज एवं आधुनिकता",*** म. प्र. सामाजिक विज्ञान अनुसंधान, उज्जैन
- ***"मध्यप्रदेश की जनजातियां:समाज एवं व्यवस्था"***, पृ. 76–77